राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का साप्ताहिक समाचार पत्र

प्रज्ञा शनि नेशन्स टाइम्स

संस्करणः नई दिल्ली व पाली राज. 08 सितंबर 2011 - 14 सितंबर 2011, वर्ष : 8, अंक : 41,
साप्ताहिक, मूल्य : 2 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्कः 250/-

shaninationstimes@ gmail.com

web : www.shanidham.in
www.facebook.com/ shreeshanidham

दाती संदेश

अपने अंतरतम में स्थित ईश्वर तक पहुंचा देते हैं श्रद्धा और विश्वास

मित्रो, जब हमारे जीवन में सब कुछ सामान्य चल रहा होता है तब हमें किसी बात की चिंता नहीं रहती। किंतु ज्योंहि हमारे जीवन में कोई ऐसी घटना घट जाती है जो प्रतिकूल असर डालती है, त्योंहि हमारे सामने अनेक प्रकार की समस्याएं उठ खड़ी होती हैं, जिनका समाधान निकालना हमारे लिए आवश्यक हो जाता है। सांसारिक समस्याओं का समाधान निकालने के लिए हमें सांसारिक साधनों का ही इस्तेमाल करना पड़ता है। किंतु जब आभ्यंतरिक जगत से जुड़ी कोई सूक्ष्म समस्या हो तो उसके समाधान के लिए सूक्ष्म साधनों का ही इस्तेमाल हो सकता है।

हमारे प्राचीन मनीषियों ने इस बात को अनेक प्रसंगों में स्पष्ट किया है कि निजकृत कर्मों का फल प्राणियों को जन्म-जन्मांतर तक भोगना पड़ता है। लेकिन कर्मों से पिंड छुड़ाना हमारे लिए तबतक संभव नहीं है जबतक हम अपने आपको आभ्यंतरिक दुनिया में प्रवेश करने की युक्ति से सुसज्जित न करें। लेकिन उसके लिए आवश्यक है कि हम आभ्यंतरिक जगत के संबंध में पूरी जानकारी रखने वाले व्यक्ति से उसकी पूरी युक्ति हासिल कर लें कि किस प्रकार वहां प्रवेश किया जा सकता है। गोस्वामी तुलसी दास ने इस संबंध में विशेष रूप से खुलासा किया है कि आभ्यंतरिक जगत में प्रविष्ट होकर अंतरतम में स्थित ईश्वर का साक्षात्कार करना तबतक संभव नहीं है जबतक साधक के अंदर श्रद्धा और विश्वास न हो। यथा –

भवानी शंकरौवंदे
श्रद्धाविश्वासरूपिम्।
याभ्यांविना न पश्यंति
सिद्धाःस्वान्तस्थमीश्वरम्॥

स्पष्ट है कि तुलसीदास ने प्रभु के साक्षात्कार के लिए श्रद्धा विश्वास को साक्षात् भवानी और शंकर का स्वरूप बतलाया है। भगवान राम की भक्ति बिना भवानीरूपी श्रद्धा और शंकररूपी विश्वास के संभव नहीं हो सकती। श्रद्धा-विश्वास के संबल से ही परमात्मा का सान्निध्य हासिल होता है। सामान्यतः श्रेष्ठता के प्रति अटूट आस्था को श्रद्धा कहा जाता है। आस्था जब सिद्धांत से व्यवहार में उतरती है, तब उसे निष्ठा कहा जाता है और जब यही निष्ठा व्यक्ति के जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भक्ति के क्षेत्र में प्रवेश करती है तब श्रद्धा का रूप ले लेती है।

श्रद्धा एक गुण है जो व्यक्ति के सदाचरणों और विशिष्टताओं के आधार पर उसे श्रेष्ठता प्रदान करती है। ऐसे सद्गुणी और श्रेष्ठजन ही व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने और उसके जीवन-पथ को आलोकित करते हुए उसे लक्ष्य तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध होते हैं। श्रीमद्भागवत गीता में एक स्थान पर कहा गया है कि कर्म, ज्ञान और उपासना का मूल श्रद्धा ही है। हमारे मनीषियों ने स्पष्ट किया है कि सबसे पहले श्रद्धा की उत्पत्ति होती है। श्रद्धा के संबल से ही विश्वास के सोपान तक पहुंचा जा सकता है। विश्वास के बाद ही मनुष्य प्रेम के सरोवर में प्रवेश कर पाता है। और प्रेम का प्रगाढ़ रूप ही भक्ति के नाम से पुकारा जाता है जो हर प्रकार के क्लेशों से जीव को छुटकार दिलाता है।

प्रेम समाज में पारस्परिक सद्भाव और सहयोग का संवर्धन करता है, जिसके अभाव में समाज में विघटन का प्रवेश हो जाता है और हमारा सामाजिक जीवन बिखरने लगता है गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि श्रद्धावान व्यक्ति ही मुझे प्राप्त कर सकता है। यह श्रद्धा ही समाज में गति उत्पन्न करती है। श्रद्धा मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई तक प्रमाणित करती है। श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि श्रद्धा अध्यात्म के क्षेत्र में तामसी तथा मेरी सेवा निर्मूला कहलाती है। तुलसी ने मानस में कहा है – श्रद्धा बिना धर्म नहीं होई। श्रद्धा और विश्वास के साथ अर्जित ऊर्जा अत्यंत विलक्षण प्रभाव प्रकट करती है।

मित्रो,

शेष पेज 14 पर

व्रत-त्यौहार

10 सितंबर से 16 सितंबर 11 तक
(भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी से आश्विन कृष्ण चतुर्थी तक)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	चन्द्र राशि	विशेष
10	शनि	त्रयोदशी	धनि.	कुंभ	पंचक प्रारंभ, दोपहर 01.18 बजे से
11	रवि	चतुर्दशी	शत.	कुंभ	अनंत चतुर्दशी व्रत, कदली व्रत, भद्रा दोपहर 01.10 बजे से आधी रात के बाद 02.04 बजे तक
12	सोम	पूर्णिमा	पू.भा.	मीन	भाद्रपद पूर्णिमा स्नान दान, प्रौष्ठपदी, महालय श्राद्ध
13	मंगल	प्रतिपदा	पू.भा.	मीन	अश्विन कृष्ण पक्ष प्रारंभ, प्रतिपदा का श्राद्ध
14	बुध	द्वितीया	उ.भा.	मीन	द्वितीया का श्राद्ध
15	गुरु	तृतीया	रेवती	मेष	तृतीया का श्राद्ध, पंचक समाप्त दोपहर 12.47 बजे, भद्रा प्रातः 08.35 बजे से रात्रि से रात्रि 09.50 बजे तक
16	शुक्र	चतुर्थी	अश्विनी	मेष	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध

पिछले कई वर्षों से हमारी आर्थिक स्थिति डांबांडोल है। आमदनी के स्रोत बंद होते जा रहें हैं। कर्जो का बोझ घटने का नाम ही नहीं लेता। अब तो मेरे पति बीमार भी रहने लगे हैं। मानसिक तनाव बढ़ने से वे भली प्रकार सो भी नहीं पाते। कृपया, कुंडली देखकर उचित उपाय बताएं ताकि हमें राहत मिल सके।

– सिमरन

आप का मकर लग्न व मिथुन राशि है। इस समय आप को शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा है। आप के पतिदेव का समय जून 2010 तक ठीक नहीं है। उसके बाद इनका समय बहुत अच्छा हो जायेगा। आप निम्न उपाय करें –

- शनिवार को शनि मंदिर में तेल चढाएं।
- सफाई में काम आने वाली वस्तुएं शनि मंदिर में दान करें।
- गले में 5 मुखी रुद्राक्ष धारण करें। तक ठीक नहीं है उसके बाद इनका समय बहुत अच्छा हो जायेगा। आप निम्न उपाय करें –
- शनिवार को शनि मंदिर में तेल चढाएं।
- सफाई में काम आने वाली वस्तुएं शनि मंदिर में दान करें।
- गले में 5 मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

आप अपनी समस्याएं हमें सादे कागज पर निम्न जानकारी के साथ लिख कर भेज सकते हैं।

नामः ....

पता : ....

दूरभाष : ....

जन्म तिथि : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

आपका प्रश्न : ....

....

एक पत्र में केवल एक प्रश्न ही लिखें। प्राप्त समस्याओं के उत्तर हम आगामी अंकों में प्रकाशित करेंगे। प्रश्न के साथ एक 5 रु. का टिकट लिखा जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें।

भेजने का पता :

अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष
विकास व अनुसंधान संस्थान

श्री शनि तीर्थ क्षेत्र, श्री शनिधाम, असोला,

फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-30

फोन : 26653600, 26654400

फैक्स / फोन : 26653500

इस पृष्ठ की सभी सामग्री अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान।

वास्तु शास्त्र : परिचय व महत्व

भवन निर्माण जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए उत्तम आवास सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। वास्तुविद् अपनी योग्यता और निर्माण कौशल से भवन को ऐसे रूप में बनाता है ताकि उसमें निवास करने वाले गृह स्वामी सुख-शांति एवं आनंद के साथ अपना जीवन यापन कर सकें।

क्रमागत

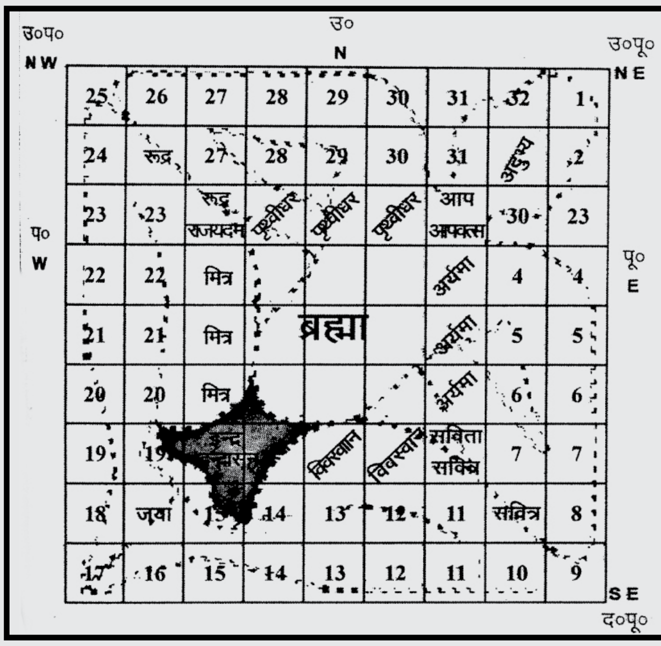

अवनत (झुकी हुई) भूमि-फल

१. पूरब दिशा की ओर अवनत भूमि वृद्धिकारक होती है।

२. आग्नेय दिशा की ओर अवनत भूमि अग्निभय कारक होती है।

३. दक्षिण दिशा की ओर अवनत भूमि मृत्यु–शोक दायिनी होती है।

४. नैर्ऋत्य दिशा की ओर अवनत भूमि गृह व धन नाश कारक होती है।

५. पश्चिम दिशा की ओर झुकी हुई भूमि अपयश या पुत्र–मरण कारक होती है।

६. वायव्य दिशा की ओर अवनत भूमि उद्वेग करने वाली होती है।

७. उत्तर दिशा में अवनत भूमि धन प्रदायिनी होती है।

८. ईशान दिशा में अवनत भूमि ज्ञान, सुखदायिनी होती है।

पृष्ठानुसार भूमि के प्रकार व फल

दिशाओं में लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई पर आधारित भूमि की गुणवत्ता और शुभाशुभ का विचार करने के बाद ही गृह–निर्माण के लिए भूमि का चयन करना लाभकारी होता है। इस दृष्टिकोण को आधार मानकर हम भूमि को चार खण्डों में विभाजन कर रहे हैं।

१. गजपृष्ठा भूमि

दक्षिणे पश्चिमे चैव नर्ऋत्ये वायुकोण के।
एषुच्चं यत्र भूमो सा गजपृष्ठाभिधायते।।
वासस्तु गजपृष्ठायां धनधान्य प्रदायकः।
आयुर्वृद्धिकरो नित्यं कर्तृः संजायते ध्रुवम्।।

अर्थात् नैर्ऋत्य और वायव्य दिशा में उन्नत भूमि गजपृष्ठा कहलाती है। ऐसी भूमि पर गृह–निर्माण करना धन–धान्य से युक्त एवं उसमें रहने वाले को दीर्घजीवी बनाता है।

क्रमशः

काल सर्प योग : कारण व निवारण के उपाय

क्रमागत

यदि राहु ग्यारहवें भाव में हो तो जातक नीच लोगों से धन प्राप्त करता है। वह बाबा या पिता का मुंह नहीं देख पाता। वह धूर्त मित्रों के साथ रहता है तथा जातक के जन्म के बाद पिता की आय भी आधी रह जाती है। लेकिन सोलह वर्ष की आयु तक का समय धन-सम्पत्ति के लिए श्रेष्ठ होता है। यदि तीसरे या पांचवें भाव में शनि हो तो जातक बहुत बड़ा योगी होता है। ऐसा जातक अपने माता-पिता से कोई सहायता नहीं लेता बल्कि स्वयं की कमाई से धनी बनता है।

उपाय

1. लोहे की गोली हमेशा अपने पास रखें।
2. सदैव चांदी के गिलास में पानी पीयें।
3. यदाकदा भंगी को चाय पिलाना और उसे उड़द व काले, नीले कपड़ों का दान देते रहना शुभ रहता है।
4. यदि जातक धूम्रपान करता हो तो चांदी की पाईप में ही करें, सीधे नहीं।
5. बृहस्पतिवार को चने की दाल व हल्दी पीले कपड़े में बांध कर दान दें।

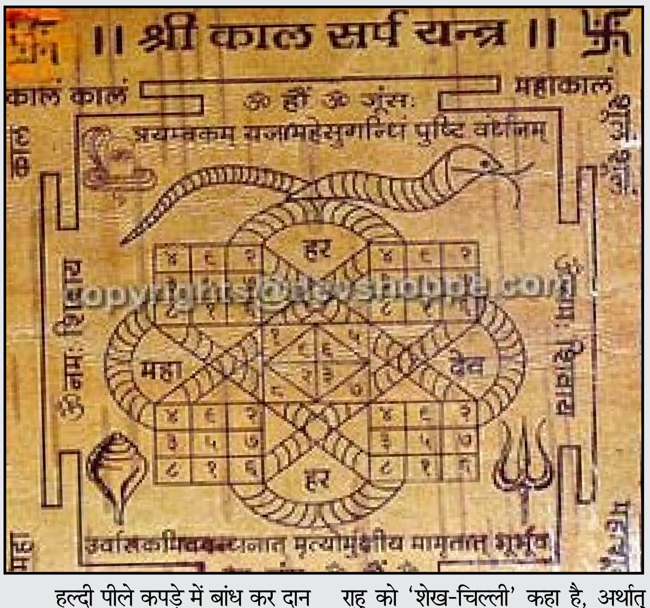

बारहवें भाव में राहु का फल व उपाय

रहा भूखा दिन भर कमाई जो ढोता।
खजाने भरें क्या न जब रात सोता॥

लाल किताब में बारहवें भाव में बैठे राहु को 'शेख-चिल्ली' कहा है, अर्थात् ऐसे जातक की सोच और जीवन में बहुत अंतर हो सकता है। किन्तु यदि बारहवें भाव में राहु शुभ हो तो जातक हर प्रकार से सुखी रहता है। जातक की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है और वह आध्यात्मिक रुचि वाला भी हो सकता है।

यदि जातक के निज पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप उसकी जन्मकुंडली में राहु बारहवें भाव में हो तो उसका खर्च बहुत होता है। लेकिन उसका यह खर्च प्रायः अच्छे कार्यों पर ही होता है। यदि बारहवें भाव में राहु हो तो कुंडली में बुध की शुभाशुभ स्थिति के अनुसार ही राहु की स्थिति शुभाशुभ हुआ करती है। इस भाव में यदि राहु के साथ मंगल हो और कुंडली में शनि भी शुभ हो तो जातक के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं होता और वह योगी तथा ज्ञानी बन सकता है।

यदि राहु बारहवें भाव में और शुक्र 10वें या 11वें भाव में हो तो जातक के कन्या पैदा होने के बाद से उसे धन की कमी नहीं रहती। किन्तु यदि कुंडली में बृहस्पति शुभ हो तो जातक आर्थिक तौर पर ज्यादा सफल रहता है। बारहवें भाव में बैठा राहु यदि अशुभ हो तो जातक आपराधिक प्रवृत्ति का नामी होता है। अतः वह झगड़ालू होता है, साथ ही उसके द्वारा झगड़े की संभावना रहती है। उसके घर में चोरी से भारी आर्थिक क्षति होती है।

क्रमशः

मानव शरीर की विशिष्ट संरचना

प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार की विधि भी हमारे देश में सदियों से आजमाई जाती रही है। यदि आप प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार का लाभ लेना चाहते हैं तो उसके लिए आपको किसी कुशल मार्गदर्शक की देखरेख में उसकी विधि सीखनी होगी और यह भी जानना होगा कि किस प्रकार के रोगों का शमन करने के लिए किस प्रकार के प्राणयाम का अभ्यास कितनी अवधि तक किया जाता है।

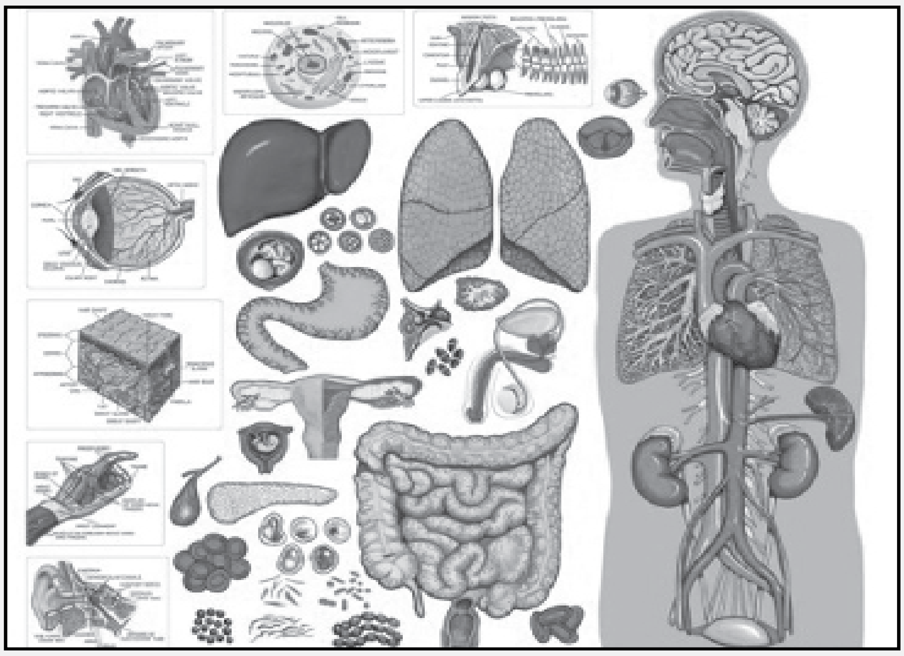

क्रमागत

प्राणायाम का रोगोपचार में उपयोग

जब उक्त क्रिया का संपादन पाँच-दस बार हो जाये, तब स्वांस भरते हुए आपको ऐसी भावना करनी चाहिए कि शरीर में खून के संचार के साथ ही मेरा सूर्य चक्र स्थित प्राण-वाहक तंत्र रोग पीड़ित स्थान की ओर दौड़ रहा है। साँस को अंदर रोके-रोके फिर भावना द्वारा प्राण को पीड़ित अंग की ओर प्रवाहित होने का मन ही मन अभिकल्पना करें। ऐसा तब तक करना चाहिए, जब तक आप साँस को आसानी से रोक सकते हों। इसके बाद धीरे-धीरे श्वास को बाहर निकालिए और भावना कीजिए कि निश्वास के साथ सब दोष, विकार और सूजन या दर्द भाप बनकर उड़े जा रहे हैं। साँस को बाहर ही रोककर पुनः मन ही मन दृढ़ विश्वास सहित यह संकल्प कीजिए कि प्राण शक्ति पाकर मेरा वह अंग विशेष पूरी तरह रोग मुक्त और सबल हो गया है।

इस क्रिया का संपादन प्रतिदिन पन्द्रह मिनट से आधा घंटा तक करना चाहिये। आप इस अवधि में प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे कि आपकी पीड़ा लगातार कम होती जा रही है, रोग वेग पूर्वक घट रहा है।

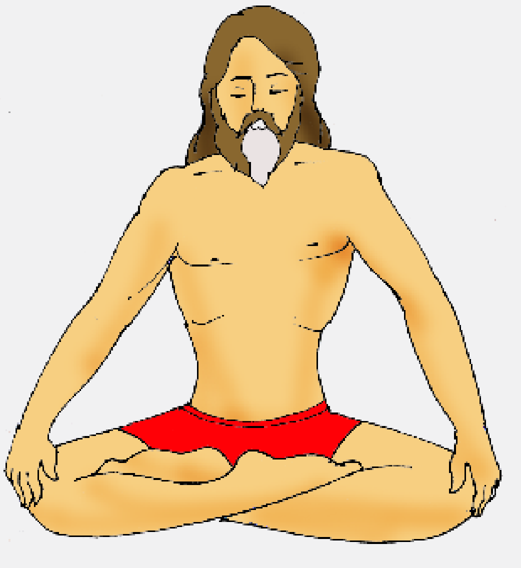

यदि किसी व्यक्ति को मामूली चोट आयी हो तो उसकी पीड़ा एक दो बार प्राणायाम करने से ही मिट जाती हैं, किन्तु जीर्ण रोग की पीड़ा शांति में कुछ दिन या कुछ सप्ताह तक लग सकते हैं। प्राणायाम द्वारा पीड़ा शमन के इस उपचार के समय दुखित अंग को साधक द्वारा अपने ही हाथों का मृदु स्पर्श देकर प्राण विद्युत के प्रवाह को तेज किया जा सकता है जिससे रोगोपचार करने में बड़ी मदद मिलती है। ऐसा करने पर भावना सबल होती है क्योंकि स्पर्श से रक्त और प्राण उस ओर दौड़ते हुए प्रत्यक्ष देखे जाते हैं। प्राणायाम के विविध प्रयोगों से अनेकानेक रोगों को बड़ी आसानी से ठीक किया जा सकता है।

क्रमशः

साप्ताहिक राशिफल

15 सितंबर - 21 सितंबर तक

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

15 को समय प्रतिकूल होगा। प्रतिद्वन्द्वी हावी होने का प्रयास करेंगे। 16, 17 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। 18, 19, 20 को समय मध्यम होगा। कार्य आदि में बाधा उत्पन्न हो सकता है। भाग-दौड़ व परेशानी बनी रहेगी। 21 को ग्रह-गोचर अनुकूल होगा। व्यवसाय वृद्धि के अवसर प्राप्त होंगे।

वृष (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

15 को समय शुभ होगा। देश-विदेश से शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। 16, 17 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। मानसिक व शारीरिक तनाव बढ़ेगा। शुभ कार्य में विलम्ब होगा। 18, 19, 20 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दूर होगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। 21 को समय मध्यम है, वाणी को अनुकूल बनाये रखें।

मिथुन (का, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

15 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व लाभप्रद सावित होगी। 16, 17 को समय शुभ व अनुकूल होगा। इच्छित कार्यों को पूरा करने का अवसर प्राप्त होगा। सभी क्षेत्र में सफलता के योग बनेंगे। धन लाभ होगा। 18, 19, 20 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। बनते हुए कार्य में बाधा उत्पन्न होगी। 21 को ग्रह-गोचर अनुकूल होगा।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

15 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा। 16, 17 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे। 18, 19, 20 को समय उत्तम है। शुभ कार्यों की योजना सफल होगी। बड़े भाई व मित्रों का विशेष सहयोग प्राप्त होगा। 21 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। बेवजह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

15 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शारीरिक व मानसिक तनाव बढ़ेगा।16, 17 को समय मध्यम होगा। भाग-दौड़ व परेशानी से राहत महसूस करेंगे। आय की स्थिति मध्यम होगी परंतु आवश्यक खर्चों की पूर्ति होती रहेगी। 18, 19, 20 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। उन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होंगे। उच्च अधिकारियों का सहयोग होगा। 21 को समय शुभ व अनुकूल होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

15 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। 16, 17 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शुभ कार्यों की योजना विफल होगी। 18, 19, 20 को धीरे-धीरे परिस्थियों में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत महसूस करेंगे। 21 को ग्रह-गोचर शुभ होगा। आर्थिक समस्या का समाधान होगा। सुख-साधन बढ़ेंगे।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

15 को ग्रह-गोचर की स्थिति पुनः अनुकूल होगी। 16, 17 को समय शुभ होगा। शुभ कार्यों की योजना सफल होगी। विवाह-सगाई के योग बनेंगे। 18, 19, 20 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। साझेदारी के कार्य में धोखा व हानि मिलना संभव होगा। 21 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

15 को समय मध्यम होगा। मानसिक तनाव से राहत महसूस करेंगे। 16, 17 को ग्रह-गोचर की शुभता उन्नति कारक होगी। धन लाभ के अवसर व नवीन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। 18, 19, 20 को रोमांस आदि के अवसर प्राप्त होंगे। मन में प्रसन्नता होगी और भाग्य साथ देगा। घूमने-फिरने में रुचि बढ़गी। 21 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

15 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। मनोनुकूल कार्य सम्पन्न नहीं होगा।16, 17 को समय मध्यम होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। शुभ कार्यों में जल्दबाजी करना ठीक नहीं होगा। 18, 19, 20 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। विशेष कार्यों में सफलता हासिल करेंगे। प्रतिद्वन्द्वी परास्त होंगे। 21 को समय शुभ है। सुख-साधन का उपयोग करेंगे।

मकर (भो, जा, जी, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

15 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। कार्य-व्यवसाय में उन्नति व नौकरी-पेशे आदि में लाभ होगा।16, 17 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। कार्य व वार्ता आदि में विघ्न उत्पन्न हो सकता है। 18, 19, 20 को समय मध्यम होगा। आवश्यक कार्य व खर्चों की पूर्ति होती रहेगी। 21 को अनुकूल व लाभप्रद स्थिति उपलब्ध होगी।

कुम्भ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

15 को समय मध्यम होगा, वाणी व व्यवहार पर नियंत्रण रखें। 16, 17 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। विशेष कार्यों की सफलता का हर्ष होगा। 18, 19, 20 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। धैर्य व विवेक से कार्य करना उचित होगा। घर-परिवार की जरूरतों के प्रति सचेत रहें। 21 को समय मध्यम होगा। संतान संबंधी समस्या पैदा हो सकती है।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

15 को ग्रह-गोचर आपके अनुकूल होंगे। 16, 17 को समय मध्यम होगा। सोच-विचार कर कार्य करने की आवश्यकता महसूस होगी। 18, 19, 20 को ग्रह-गोचर की स्थिति पुनः अनुकूल होगी। साहस व पराक्रम बढ़ेगा। समाज व परिवार में यश-मान बढ़ेगा। 21 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी।

अनन्त चतुर्दशी व्रत

जिसके पुण्य से निजकृत पापों के फलस्वरूप मिलने वाली प्रतिकूलता व दरिद्रता का शमन होता है और मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है।

हमारे देश में तरह-तरह के पर्व-त्यौहार मनाये जाते हैं। पर्व-त्यौहारों की बहुलता की वजह से कुछ लोग इसे त्यौहारों का देश भी कहते हैं। अनंत चतुर्दशी एक ऐसा व्रत है जिसे बालक-वृद्ध, सभी प्रकार के नर-नारी आसानी से संपादित कर अपने समस्त दोषों के निवारण के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और मात्र दोपहर तक निराहार रहने के बाद कथा सुन कर व्रत का पालन कर लेते हैं। इस साल यह व्रत 11 सितंबर को पड़ रहा है। प्रस्तुत है भविष्य पुराण से उद्धृत एक प्रसंग जिसमें इसकी विधि व कथा पर समुचित प्रकाश डाला गया है।

सम्पूर्ण पापों का नाशक, कल्याणकारक तथा सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाला अनन्त चतुर्दशी नामक एक महान व्रत है, जिसे भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को सम्पन्न किया जाता है।

एक बार भगवान श्री कृष्ण से युधिष्ठिर ने पूछा- भगवन्! आपने जो अनन्त नाम लिया है, क्या ये अनन्त शेषनाग हैं या कोई अन्य नाग हैं या परमात्मा हैं या ब्रह्म हैं? अनन्त संज्ञा किसकी है? इसे आप बतलायें।

भगवान श्री कृष्ण बोले- राजन! अनन्त मेरा ही नाम है। कला, काष्ठा, मुहूर्त, दिन, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग तथा कल्प आदि काल-विभागों के रूप में, मैं ही अवस्थित हूँ। संसार का भार उतारने तथा दानवों का विनाश करने के लिये वसुदेव के कुल में मैं ही उत्पन्न हुआ हूँ। पार्थ! आप मुझे ही विष्णु, जिष्णु, हर, शिव, ब्रह्मा, भास्कर, शेष, सर्वव्यापी ईश्वर समझिए और अनन्त भी मैं ही हूँ। मैंने आपको विश्वास उत्पन्न करने के लिये ऐसा कहा है।

युधिष्ठिर ने पुनः पूछा- भगवन! मुझे आप अनन्त व्रत के माहात्म्य और विधि तथा इसे किसने पहले किया था और इस व्रत का क्या पुण्य है, इसे बजलायें।

भगवान श्री कृष्ण ने कहा- युधिष्ठिर! इस सम्बंध में एक प्राचीन आख्यान है, उसे आप सुनें। कृत युग में वसिष्ठ गोत्री सुमन्तु नाम के एक ब्राह्मण थे। उनका महर्षि भृगु की कन्या दीक्षा से वेदोक्त विधि से विवाह हुआ था। उन्हें सभी शुभ लक्षणों से सम्पन्न एक कन्या उत्पन्न हुई, जिसका नाम शीला रखा गया।

कुछ समय बाद उसकी माता दीक्षा का ज्वर से देहान्त हो गया और उस पतिव्रता को स्वर्ग लोक प्राप्त हुआ। सुमन्तु ने पुनः एक कर्कशा नाम की कन्या से विवाह कर लिया। वह अपने कर्कशा नाम के समान ही दुःशील, कर्कश तथा नित्य कलहकारिणी एवं चण्डीरूपा थी। शीला अपने पिता के घर में रहती हुई दीवाल, देहली तथा स्तम्भ आदि में माङ्गलिक स्वस्तिक, पद्म, शङ्ख आदि विष्णु चिह्नों को अङ्कित कर उनकी अर्चना करती रहती। सुमन्तु को शीला के विवाह की चिन्ता होने लगी। उन्होंने शीला का विवाह कौंडिन्य मुनि के साथ कर दिया। विवाह के अनन्तर सुमन्तु ने अपनी पत्नी से कहा- देवि! दामाद के लिये पारितोषिक रूप में कुछ दहेज द्रव्य देना चाहिये। यह सुनकर कर्कशा क्रुद्ध हो उठी और उसने घर में बने मण्डप को उखाड़ डाला तथा भोजन से बचे

शेष पेज 15 पर

श्राद्ध पर विशेष

पितरों की अनुकंपा पाने के लिए आवश्यक है वार्षिक श्राद्ध व तर्पण

हमारे धर्मग्रंथों में देवी-देवताओं व पितरों की अनुकंपा प्राप्त करने के लिए उनके नित्य-पूजन व तर्पण आदि का विधान बताया गया है। जिस प्रकार सभी देवी-देवताओं के वार्षिक पूजन विशेष उत्सव पूर्वक करने का विधान है उसी प्रकार पितरों की अनुकंपा पाने के लिए भी उनका वार्षिक श्राद्ध व तर्पणादि करने की विधि बतायी गयीहै। प्रत्येक साल भाद्रपद की पूर्णिमा, जिसे श्राद्धी पूर्णिमा भी कहते हैं, उसी तिथि से आश्विन की अमावस्या पर्यन्त सभी पितरों का श्राद्ध विशेष रूप से किया जाता है। यही वजह है कि आश्विन कृष्ण पक्ष को पितृ पक्ष भी कहते हैं। जिस तिथि को जिस पितर स्वर्गीय निकट संबंधी की मृत्यु हुई रहती है उसी तिथि को उसका श्राद्ध किया जाता है। अमावस्या को ज्ञात-अज्ञात तिथि वाले सभी पितरों का श्राद्ध कर पितृ विजर्सन करते हैं। हमारे देश में परंपरागत रूप से सभी लोग किसी न किसी रूप में देशाचार भेद से श्राद्ध अवश्य करते हैं। इस साल 12 सितंबर से 27 सितंबर तक पितरों के श्राद्ध का सुअवसर है। जिसमें पितरों को प्रसन्न कर वंश वृद्धि, रोग निवृति व सुख-समृद्धि आसानी से उपलब्ध कर प्रतिकूलताओं को दूर किया जा सकता है। इस अवसर पर प्रस्तुत है नारद पुराण से उद्धृत वह प्रसंग जिसमें पार्वण श्राद्ध विधि पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

श्राद्ध दो प्रकार का होता है - सपात्रक श्राद्ध तथा अपात्रक श्राद्ध। सपात्रक श्राद्ध में विश्वेदेवों एवं पितरों के रूप में साक्षात ब्राह्मणों को ही आसन पर बिठाकर समस्त श्राद्ध विधि सम्पन्न की जाती है। यहां इसी सपात्रक श्राद्ध की विधि का निर्देश किया गया है। ऐसे श्राद्ध के लिये पूर्ण सात्त्विक, जाति, विद्या, तप आदि की दृष्टि से अति पवित्र एवं उत्कृष्ट ब्राह्मण ही उपादेय हैं। कलियुग में ऐसे ब्राह्मण दुर्लभ हैं। इसीलिए वर्तमान में अपात्रक श्राद्ध का ही आयोजन किया जाता है।

क्रमशः

सूर्य पुत्र जीजि के व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण के पुत्र के प्राण बच गये और ब्राह्मण और ब्राह्मणी पुत्र-शोक के दुःख से मुक्त हो गये। अतः जो कोई सूर्य पुत्र जीजि के व्रत को करता है, उसके पुत्र और पौत्र चिरायु को प्राप्त होते हैं। जो कोई इस कथा को सुनता या पढ़ता है उसे भी कभी पुत्र शोक प्राप्त नहीं होता।

जीवितत्पुत्रिकाष्टमी व्रत

जिसके पुण्य प्रताप से संतान दीर्घायु होती है और भगवान सूर्य और पितरों के आशीर्वाद से निःसंतान व्रतियों की गोद भी भर जाती है।

क्रमागत

सातवें पुत्र के होते ही धौम्य ऋषि ने सपत्नीक इस व्रत को किया और सूर्य भगवान से पुत्र के चिरायु हाने की प्रार्थना की। ब्राह्मण की प्रार्थना और व्रत के प्रभाव से सूर्य के रथ की गति रुक गयी और उन्होंने अपनी माला में से एक पुष्प निकालकर ऋषि की पत्नी पर गिरा दिया और उनका रथ आगे बढ़ने लगा। कुछ काल व्यतीत होने पर ब्राह्मण के पुत्र के प्राणों को हरने यमराज आया तो ब्राह्मणी उसे देखकर चिल्लाई और धौम्य ऋषि ने उसी समय भगवान श्री कृष्ण की आराधना की, तब भगवान श्री कृष्ण उसी समय आकर ब्राह्मणी से कहने लगे कि तुम किसी प्रकार का भय मत करो, सूर्य का दिया हुआ पुष्प पुत्र के शरीर से स्पर्श कर दो और उस पुष्प को यमराज पर फेंक दो, यमराज स्वयं ही भस्म हो जायेगा। ब्राह्मण ने ऐसा ही करना चाहा, परन्तु जब वह पुष्प यमराज को मारने लगा तो यमराज भाग खड़ा हुआ। ब्राह्मण ने पुष्प उठाकर यमराज की तरफ फेंका तो यमराज के लगते ही यमराज काला स्याह शनिश्चर के रूप सा हो गया। भगवान ने ब्राह्मण के पुत्र को अभयदान दिया, तब शनिश्चर को पीपल के वृक्ष पर रहने का स्थान दिया।

इस प्रकार से सूर्य पुत्र जीजि के व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण के पुत्र के प्राण बच गये और ब्राह्मण और ब्राह्मणी पुत्र-शोक के दुःख से मुक्त हो गये। अतः जो कोई सूर्य पुत्र जीजि के व्रत को करता है, उसके पुत्र और पौत्र चिरायु को प्राप्त होते हैं। जो कोई इस कथा को सुनता या पढ़ता है उसे भी कभी पुत्र शोक प्राप्त नहीं होता।

वामन भगवान अदिति के गर्भ से प्रादुर्भूत हुए। उनके पैर छोटे, शरीर छोटा, सिर बड़ा और छोटे बच्चे के समान हाथ-पैर, उदर आदि थे। वामन रूप में जब अदिति ने पुत्र को देखा और जब वह कुछ कहने को उद्यत हुई तो देवमाया से उनकी वाणी अवरुद्ध हो गयी।

जयंती पर विशेष

वामनावतार की कथा

क्रमागत

इस पर भगवान ने कहा- देवगणो! मैं यह जानता हूँ कि विरोचन पुत्र बलि तीनों लोकों का कण्टक बना हुआ है, पर उसने तपस्या द्वारा अपनी आत्मा की अपने में भावना कर ली है, वह शान्त है, जितेन्द्रिय है और मेरा भक्त है, उसके प्राण मुझमें ही लगे हैं, वह सत्यप्रतिज्ञ है। बहुत दिनों के बाद उसकी तपस्या का अन्त होगा। जब मैं इसे अविनय सम्पन्न समझूँगा, तब उसका अभीष्ट हरण कर लूँगा और आपको दे दूँगा। पुत्र की इच्छा से देव माता अदिति भी मेरे पास आयी थीं। देवताओं! मैं उनका भी कल्याण करूँगा, अवतार लेकर देवताओं का संरक्षण और असुरों का विनाश करूँगा। इसलिए आप लोग निश्चिन्त होकर जायँ और समय की प्रतीक्षा करें।

देवगण भगवान विष्णु को स्मरण करते हुए वापस आ गये। इधर अदिति भी भगवान विष्णु का ध्यान करती थीं। कुछ काल में उसने गर्भ में

शेष पेज 15 पर

दालें पौष्टिक तत्वों से भरपूर

दालें हमारे भोजन का सबसे महत्वपूर्ण भाग होती हैं। दुर्भाग्यवश आज आधुनिकता की दौड़ में फास्ट फूड के प्रचलन से हमारे भोजन में दालों का प्रयोग कम होता जा रहा है, जिसका दुष्प्रभाव लोगों, विशेषकर बच्चों एवं युवा वर्ग के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।

दालों की सर्वप्रमुख विशेषता यह होती है कि आँच पर पकने के बाद भी उनके पौष्टिक तत्व सुरक्षित रहते हैं। इनमें प्रोटीन और विटामिन्स बहुतायत में पाए जाते हैं। आइए जानें कि दालों में क्या-क्या छिपा है -

अरहर - इसे तुवर भी कहा जाता है। इसमें खनिज, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम आदि पर्याप्त माता में पाया जाता है। यह सुगमता से पचने वाली दाल है, अत रोगी को भी दी जा सकती है, परंतु गैस, कब्ज एवं साँस के रोगियों को इसका सेवन कम ही करना चाहिए।

मूँग - मूँग साबुत हो या धुली, पोषक तत्वों से भरपूर होती है। अंकुरित होने के बाद तो इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्वों कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और विटामिन्स की माता दोगुनी हो जाती है। मूँग शक्तिवर्द्धक होती है। वर और कब्ज के रोगियों के लिए इसका सेवन करना लाभदायक होता है।

चना - चना और चने की दाल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य और सौंदर्य में लाभकारी होती है, बल्कि अनेक रोगों की चिकित्सा करने में भी सहायक होती है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, नमी, चिकनाई, रेशे, कैल्शियम, आयरन व विटामिन्स पाए जाते हैं। रक्ताल्पता, कब्ज, डायबिटिज और पीलिया जैसे रोगों में चने का प्रयोग लाभकारी होता है। बालों और त्वचा की सौंदर्य वृद्धि के लिए चने के आटे का प्रयोग हितकारी होता है।

उड़द -उड़द की तासीर ठंडी होती है, अत इसका सेवन करते समय शुद्ध घी में हींग का बघार लगा लेना चाहिए। इसमें भी कार्बोहाइड्रेट, विटामिन्स, कैल्शियम व प्रोटीन पर्याप्त माता में पाए जाते हैं। बवासीर, गठिया, दमा एवं लकवा के रोगियों को इसका सेवन कम करना चाहिए।

मोठ - कैल्शियम, फॉस्फोरस, कार्बोहाइड्रेट व विटामिन्स से युक्त मोठ की दाल कृमि नाशक होती है।

मसूर - इसकी प्रकृति गर्म, शुष्क, रक्तवर्द्धक एवं रक्त में गाढ़ापन लाने वाली होती है। दस्त, बहुमूत, प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन में मसूर की दाल का सेवन लाभकारी होता है।

कुलथी - यह भी एक प्रकार की दाल होती है। इसके सेवन से वात, श्वेत-प्रदर व मोटापा से छुटकारा पाने में मदद मिलती है।

पेज 9 का शेष

अपने अंतरतम मे...

हमारी सामान्य जीवन यात्रा में दो चीजें होती हैं, जिसकी वजह से हम भटक जाया करते हैं। पहला, यदि कोई धक्का लगता है तो हमारी चाल लड़खड़ा जाती है और दूसरा, यदि हमें कोई जबरन घसीटने लगता है तो हमारा नियत मार्ग इधर-उधर हो जाता है। लोभ, मोह, काम, क्रोध, मान, पद, प्रतिष्ठा – इन सबके धक्के हमें गिरा देते हैं। घसीटने के मामले में इंद्रियां बहुत ताकतवर होती हैं। खींच-खींचकर विषयों की ओर ले जाकर पटक देती हैं। इनसे बचने के लिए अपने भीतर या तो अति आत्मविश्वास जगा लें या श्रद्धा का अंकुर पैदा कर लें। श्रद्धावान व्यक्ति नसीहतों के प्रति गंभीर होता है। उसके लिए सीख आचरण से अधिक भरोसे का विषय होती है। माता-पिता और गुरुजन की सीख वह अनुशासन के रूप में नहीं, श्रद्धा के रूप में लेता है। इंद्रियों से घसीटे गए लोग भविष्य के अज्ञात भय से भी डरने लगते हैं कि अब क्या होगा? यदि श्रद्धा जीवन में है तो भय को जाना ही पड़ेगा।

एक महत्वपूर्ण बात और है कि जब हमारे जीवन में भय हावी होता है तब उसके मूल में अहंकार जरूर होता है। अहंकारी व्यक्ति का जीवन दूसरों द्वारा की गई प्रशंसा और आलोचना पर निर्भर होता है। उसे सदैव भय बना रहता है कि दूसरे उसके बारे में क्या कहेंगे और इसलिए वह धक्के भी खाता है, लेकिन श्रद्धा आपको स्वयं पर टिका देती है, उसे निर्भय बना देती है। यदि आप अपने आसपास के हर व्यक्ति की तरफ ध्यान देंगे तो तकरीबन सबमें यही बात नजर आएगी। हर व्यक्ति स्वयं को भूलकर व्यर्थ की दौड़ में भागता चला जा रहा है। वह स्वयं को भूल गया है कि आखिर वह है कौन? आज आवश्यकता है इस झंझावत से निकलने की, स्वयं के अस्तित्व को समझने की। परिवर्तन की इस सतत प्रक्रिया में स्थिर होने की। यात्रा हो, परंतु शून्य से महाशून्य की परिधि से केंद्र की, अज्ञान से ज्ञान की, अंधकार से प्रकाश की, असत्य से सत्य की।

स्वयं के अस्तित्व को तलाशकर ही हम जीवन के सही मूल्यों को समझ पायेंगे। हम प्राय: अपना जीवन कंकड़-पत्थर बटोरने में व्यर्थ गंवा देते हैं। सत्ता, संपत्ति, सत्कार पाकर भी अंतत: शून्य ही हाथ लगता है। तो हम क्यों न आज ही जग जाएं, पुन: उठ खड़े हों। स्वयं की खोज करके हमें अपनी अंतरात्मा को प्रकाशित करना चाहिए। हमारा ध्यान दुनिया में है, परंतु स्वयं के अंदर छिपी विराटता में नहीं। हम बहिर्मुखी हैं अंतर्मुखी नहीं। बस, यही हम सबको समझना है। सारी उलझन स्वयं को समझने में है। अपने परमपिता परमेश्वर के प्रति हम कृतज्ञता तक ज्ञापित नहीं करते, जिसने अपनी परम कृपा से हमें अपना ही अंश बनाकर इस धरा पर मनुष्य रूप में भेजा है। यदि हम स्वयं के प्रति थोड़ा सा सचेत हो जाएं तो बात बनते देर नहीं लगेगी। तमाम ऐसे लोग जिन्होंने जीवन में कुछ गौरवशाली कार्य किया, वे सभी स्वयं के अंदर छिपे अथाह सागर को समझने और मापने की बात करते हैं, जो कृत्रिमता से कोसों दूर हो, जहां गहन शांति हो। शांति में असीम शक्ति है, जिससे स्वयं के अस्तित्व को पहचानने की शक्ति प्राप्त होती है, साथ ही परमपिता परमात्मा की निकटता पाने का मार्ग प्रशस्त होता है। अद्भुत शक्ति है इसमें।

श्रद्धा के अभाव में समस्त साधन असत् और निष्फल हो जाते हैं। सामान्यत: आध्यात्मिक क्षेत्र में श्रद्धा के साथ ही विश्वास का होना भी परमाश्यक होता है। भौतिक और आधुनिक सभ्यता के प्रभाव के कष्ट हमारे जीवन में अश्रद्धा और अविश्वास का विस्तार करते हैं, जिससे हम अपने गौरवशाली अतीत को विस्मरण कर पूर्वजों से विरासत में पाप्त हुई संस्कृति और अध्यात्मिक ऊर्जा को खोते जा रहे हैं। गीता में कहा गया है कि श्रद्धा के बिना किए गए तप, जप, अन्य कर्म असत् हो जाते हैं। जब मनुष्य श्रद्धा व विश्वास का अवलंबन लेते हुए अपने अंतरतम में झांकता है तब उसे अंतरात्मा के प्रकाश में तत्काल ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं।

श्रद्धा के अभाव में समस्त साधन असत् और निष्फल हो जाते हैं। सामान्यत: आध्यात्मिक क्षेत्र में श्रद्धा के साथ ही विश्वास का होना भी परमाश्यक होता है। भौतिक और आधुनिक सभ्यता के प्रभाव के कष्ट हमारे जीवन में अश्रद्धा और अविश्वास का विस्तार करते हैं, जिससे हम अपने गौरवशाली अतीत को विस्मरण कर पूर्वजों से विरासत में पाप्त हुई संस्कृति और अध्यात्मिक ऊर्जा को खोते जा रहे हैं।

पेज 12 का शेष

अनन्त चतुर्दशी..

हुए कुछ पदार्थों को पाथेय के रूप में प्रदान कर कहा- चले जाओ, फिर उसने कपाट बंद कर लिया।

कौंडिन्य भी शीला को साथ लेकर बैल गाड़ी से धीरे-धीरे वहाँ से चल पड़े। दोपहर का समय हो गया। वे एक नदी के किनारे पहुँचे। शीला ने देखा कि शुभ वस्त्रों को पहने हुए कुछ स्त्रियाँ चर्तुदशी के दिन भक्तिपूर्वक जनार्दन की अलग-अलग पूजा कर रही हैं। शीला ने उन स्त्रियों के पास जाकर पूछा- देवियों! आप लोग यहाँ किसकी पूजा कर रही हैं, इस व्रत का क्या नाम है। इस पर वे स्त्रियाँ बोलीं- यह व्रत अनन्त चतुर्दशी नाम से प्रसिद्ध है। शीला बोली- मैं भी इस व्रत को करूँगी, इस व्रत का क्या विधान है, किस देवता की इसमें पूजा की जाती है और दान में क्या दिया जाता है, इसे आप लोग बतायें। इस पर स्त्रियों ने कहा शीले! प्रस्थभर पक्वान्न का नैवेद्य बनाकर नदी तट पर जाय, वहाँ स्नान कर एक

मण्डल में अनन्त स्वरूप भगवान विष्णु की गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि उपचारों से पूजा करे और कथा सुने। उन्हें नैवेद्य अर्पित करे। नैवेद्य का आधा भाग ब्राह्मण को निवेदित कर आधा भाग प्रसाद रूप में ग्रहण करने के लिये रखे। भगवान अनन्त के सामने चौदह ग्रन्थियुक्त एक दोरक (डोरा) स्थापित कर उसे कुंकुमादि से चर्चित करे। भगवान को वह दोरक निवेदित करके पुरुष दाहिने हाथ में और स्त्री बायें हाथ में बाँध ले। दोरक बन्धन का मन्त्र इस प्रकार है-

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नान्
समभ्युद्धर वासुदेव।
अनन्तरूपे विनियोजितात्मा
ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते॥

हे वासुदेव! अनन्त संसार रूपी महासमुद्र में मैं डूब रही हूँ, आप मेरा उद्धार करें, साथ ही अपने अनन्त रूप में मुझे भी आप विनियुक्त कर लें। हे अनन्त स्वरूप! आपको मेरा बार-बार प्रणाम है।

दोरक बाँधने के अनन्तर नैवेद्य ग्रहण करना चाहिये। अन्त में विश्व रूपी अनन्त देव भगवान नारायण का ध्यान कर अपने घर जाये। शीले! हमने इस अनन्त व्रत का वर्णन किया। तदनन्तर शीला ने भी विधि से इस व्रत का अनुष्ठान किया। पाथेय निवेदित कर उसका आधा भाग ब्राह्मण को प्रदान कर आधा स्वयं ग्रहण किया और दोरक भी बाँधा। उसी समय शीला के पति कौंडिन्य भी वहाँ आये। फिर वे दोनों बैलगाड़ी से अपने घर की ओर चल पड़े। घर पहुँचते ही व्रत के प्रभाव से उनका घर प्रचुर धन-धान्य एवं गोधन से सम्पन्न हो गया। वह शीला भी मणि मुक्ता तथा स्वर्णादि के हारों और वस्त्रों से सुशोभित हो गयी। वह साक्षात सावित्री के समान दिखलायी देने लगी। कुछ समय बाद एक दिन शीला के हाथ में बँधे अनन्त दोरक को उसके पति ने क्रुद्ध हो तोड़ दिया। उस विपरीत कर्म विपाक से उनकी सारी लक्ष्मी नष्ट हो गयी, गोधन आदि चोरों ने चुरा लिया। सभी कुछ नष्ट हो गया। आपस में कलह होने लगा। मित्रों ने सम्बंध तोड़ लिया। अनन्त भगवान के तिरस्कार करने से उनके घर में दरिद्रता का साम्राज्य छा गया। दुःखी होकर कौंडिन्य एक गहन वन में चले गये और विचार करने लगे कि मुझे कब अनन्त भगवान के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होगा। उन्होंने पुनः निराहार रह कर तथा ब्रह्मचर्यपूर्वक भगवान अनन्त का व्रत एवं उनके नामों का जप किया और उनके दर्शनों की लालसा से विह्वल होकर वे पुनः दूसरे निर्जन वन में गए। वहाँ उन्होंने एक फले-फूले आम्र वृक्ष को देखा और उससे पूछा कि क्या तुमने अनन्त भगवान को देखा है? तब उसने कहा- ब्राह्मण देवता! मैं अनन्त को नहीं जानता। इस प्रकार वृक्षों आदि से अनन्त भगवान के विषय में पूछते-पूछते घास चरती हुई एक सवत्सा गौ को देखा। कौंडिन्य ने गौ से पूछा- धेनुके! क्या तुमने अनन्त को देखा हैं? गौ ने कहा- विभो! मैं अनन्त को नहीं जानती। इसके पश्चात कौंडिन्य फिर आगे बढ़े। वहाँ उन्होंने देखा कि एक वृषभ घास पर बैठा है। पूछने पर वृषभ ने भी बताया कि मैंने अनन्त को नहीं देखा है। फिर आगे जाने पर कौंडिन्य को दो रमणीय तालाब दिखलायी पड़े। कौंडिन्य ने उनसे भी अनन्त भगवान के विषय में पूछा, किंतु उन्होंने भी अनभिज्ञता प्रकट की। इसी प्रकार कौंडिन्य ने अनन्त के विषय में गर्दभ तथा हाथी से पूछा, उन्होंने भी नकारात्मक उत्तर दिया। इस पर कौंडिन्य अत्यन्त निराश हो पृथ्वी पर गिर पड़े। उसी समय कौंडिन्य मुनि के सामने कृपा करके भगवान अनन्त वृद्ध ब्राह्मण के रूप में प्रकट हो गये और पुनः उन्हें अपने दिव्य चतुर्भुज विश्व रूप का दर्शन कराया। भगवान का दर्शन कर कौंडिन्य अत्यन्त प्रसन्न हो गये और उनकी प्रार्थना करने लगे तथा अपने अपराधों के लिये क्षमा माँगने लगे-

पापोऽहं पापकर्माहं
पापात्मा पापसम्भवः।
पाहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव॥
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं
च सुजीवितम्।

कौंडिन्य ने भगवान से पुनः पूछा- भगवन! घोर वन में मुझे जो आम्र वृक्ष, वृषभ, गौ, पुष्करिणी, गर्दभ तथा हाथी मिले, वे कौन थे? आप तत्त्वतः इसे बतलायें।

भगवान बोले- द्विजदेव! वह आम्र वृक्ष पूर्वजन्म में एक विद्वान ब्राह्मण था, किंतु उसे अपनी विद्या का बड़ा गर्व था। उसने शिष्यों को विद्या-दान नहीं किया, इसलिये वह वृक्ष योनि को प्राप्त हुआ। जिस गौ को तुमने देखा, वह उपजाऊ शक्ति रहित वसुन्धरा थी, वह भूमि सर्वथा निष्फल थी, अतः वह गौ बनी। वृषभ सत्य धर्म का आश्रय ग्रहण कर धर्मस्वरूप ही था। वे पुष्करिणियाँ धर्म और अधर्म की व्यवस्था करने वाली दो ब्राह्मणियाँ थीं। वे परस्पर बहिनें थीं, किंतु धर्म-अधर्म के विषय में उनमें परस्पर अनुचित विवाद होता रहता था। उन्होंने किसी ब्राह्मण, अतिथि अथवा भूखे को दान भी नहीं किया। इसी कारण वे दोनों बहिनें पुष्करिणी हो गयीं, यहाँ भी लहरों के रूप में आपस में उनमें संघर्ष होता रहता है। जिस गर्दभ को तुमने देखा, वह पूर्व जन्म में महान क्रोधी व्यक्ति था और हाथी पूर्वजन्म में धर्मदूषक था। हे विप्र! मैंने तुम्हें सारी बातें बतला दीं। अब तुम अपने घर जाकर अनन्त व्रत करो, तब मैं तुम्हे उत्तम नक्षत्र का पद प्रदान करूँगा। तुम स्वयं संसार में पुत्र-पौत्रों एवं सुख को प्राप्त कर अन्त में मोक्ष प्राप्त करोगे। ऐसा वर देकर भगवान अन्तर्धान हो गये।

कौंडिन्य ने भी घर आकर भक्तिपूर्वक अनन्त व्रत का पालन किया और अपनी पत्नी शीला के साथ वे धर्मात्मा उत्तम सुख प्राप्त कर अन्त में स्वर्ग में पुनर्वसु नामक नक्षत्र के रूप में प्रतिष्ठित हुए। जो व्यक्ति इस व्रत को करता है या इस कथा को सुनता है, वह भी भगवान के स्वरूप में मिल जाता है।

पेज 13 का शेष

वामनावतार..

भाद्रपद मास के श्रवण नक्षत्र से युक्त एकादशी तिथि में जब त्रिविक्रम वामन भगवान का पृथ्वी पर अवतार हुआ तब पृथ्वी डगमगाने लगी। दैत्यों में भय छा गया और देवगण प्रसन्न हो गये। महामुनि कश्यप ने शिशु के जातककर्मादि संस्कार स्वयं ही किये। वामन भगवान दण्ड, मेखला, यज्ञोपवीत, कमण्डलु तथा छत्र धारण कर राजा बलि के यज्ञस्थल में गये। उन्होंने बलि से कहा - यज्ञपते! मुझे तीन पग भूमि प्रदान करो।

भगवान को धारण किया। नवें मास में वामन भगवान अदिति के गर्भ से प्रादुर्भूत हुए। उनके पैर छोटे, शरीर छोटा, सिर बड़ा और छोटे बच्चे के समान हाथ-पैर, उदर आदि थे। वामन रूप में जब अदिति ने पुत्र को देखा और जब वह कुछ कहने को उद्यत हुई तो देवमाया से उनकी वाणी अवरुद्ध हो गयी।

हे नरोत्तम! भाद्रपद मास के श्रवण नक्षत्र से युक्त एकादशी तिथि में जब त्रिविक्रम वामन भगवान का पृथ्वी पर अवतार हुआ तब पृथ्वी डगमगाने लगी। दैत्यों में भय छा गया और देवगण प्रसन्न हो गये। महामुनि कश्यप ने शिशु के जातककर्मादि संस्कार स्वयं ही किये।

वामन भगवान दण्ड, मेखला, यज्ञोपवीत, कमण्डलु तथा छत्र धारण कर राजा बलि के यज्ञस्थल में गये। उन्होंने बलि से कहा- यज्ञपते! मुझे तीन पग भूमि प्रदान करो।

बलि ने कहा- मैंने दे दिया। उसी समय भगवान वामन ने अपना शरीर इतना विशाल बना लिया कि एक पग से सम्पूर्ण पृथ्वी लोक को नाप लिया तथा द्वितीय पग से ब्रह्मलोक नाप लिया। तीसरा पग रखने के लिये जब कोई स्थान न मिला तो देवगण, सिद्ध, ऋषि-मुनि इस कृत्य को देख कर साधु-साधु कहने लगे और भगवान की स्तुति करने लगे।

तदनन्तर सभी दैत्य गणों को जीत कर उन्होंने दैत्यराज बलि से कहा- तुम अपने परिजनों के साथ सुतल लोक में चले जाओ। मेरे द्वारा सुरक्षित रह कर तुम वहाँ अभीप्सित भोगों का उपभोग करोगे। वर्तमान में जो इन्द्र हैं, उनके बाद तुम इन्द्रत्व को प्राप्त करोगे।

बलि भगवान को प्रणाम कर प्रसन्न हो सुतल लोक में चला गया। भगवान ने देवताओं से कहा- आप लोग अपने-अपने स्थान पर निश्चिन्त होकर रहें। भगवान भी संसार का कल्याण करके वहीं अर्न्तधान हो गये।

राजन! ये सभी कर्म एकादशी तिथि को हुए थे। अतः यह तिथि देवताओं की विजय तिथि मानी गयी है। यही एकादशी तिथि फाल्गुन मास में पुष्य नक्षत्र से युक्त होने पर विजया तिथि कही गयी है। एकादशी के दिन उपवास कर रात्रि में भगवान वामन की प्रतिमा बना कर पूजा करनी चाहिये। प्रतिमा के समीप हर कुण्डिका, छत्र, चरणपादुका, यष्टि, यज्ञोपवीत, कमण्डलु तथा मृगचर्म आदि स्थापित करना चाहिये। निम्न मन्त्रों से उन्हें नमस्कार करे और प्रार्थना करे-

अनेककर्मनिर्बन्धध्वंसिनं जलशायिनम्।
नतोऽस्मि मधुरावासं माधवं मधुसूदनम्॥
नमो वामनरूपाय नमस्तेऽस्तु त्रिविक्रम।
नमस्ते मणिबन्धाय वासुदेव नमोऽस्तु ते॥
नमो नमस्ते गोविन्द वामनेश त्रिविक्रम।
अघौघसंक्षयं कृत्वा सर्वकामप्रदो भव॥

इसके अनन्तर भगवान को शयन कराये। गीत-वाद्य, स्तुति आदि के द्वारा जागरण करे। प्रातःकाल उस प्रतिमा की पूजा कर मन्त्रपूर्वक उसे ब्राह्मण को निवेदित कर दे। ब्राह्मणों को भोजन करा कर स्वयं भी मौन होकर भोजन करे। इस व्रत के करने से व्रती का एक मन्वन्तरपर्यन्त विष्णु लोक में वास होता है, तदनन्तर वह इस लोक में आकर चक्रवर्ती दानी राजा होता है। वह नीरोग, दीर्घायु एवं पुत्रवान होता है।

हमारे प्रकाशन

श्री शनिचरणानुरागी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर दाती जी महाराज राजस्थानी ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक पुस्तकों की रचना की है। उनके अनेक ग्रंथ तो अब भी अप्रकाशित पड़े हुए हैं। प्रभु की कृपा से हम उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं, जिनकी काफी दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी। आशा है, इन पुस्तकों से पाठकगण विशेष लाभ उठाने में सफल होंगे।

ज्योतिष व वास्तु

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
सरल ज्योतिष प्रवेशिका 200
सरल गोचर प्रवेशिका...............200
सरल मुहूर्त प्रवेशिका................100
सरल वास्तु प्रवेशिका................150
सरल हस्तरेखा विज्ञान प्रवेशिका...150
ताजिक ज्योतिष.......................150
सामान्य ज्योतिष एवं खगोल..........50
शनि समग्र दर्शन (प्रथम भाग)....200
शनि समग्र दर्शन (द्वितीय भाग)...200
शनि साधना के चमत्कारिक प्रयोग....100
द्वादश भावों में श्री शनिदेव..........100
क्या है शनि की साढेसाती और ढैय्या...100
शनि उपासना क्यों और कैसे?.....200
शनि चरित्र गाथा व शनितीर्थ महात्म्य...100
शनि शांति के अमोघ देव अनुष्ठान.....100
शनिवार व्रत विधि व कथा............25
काल सर्प योग.........................100

स्वास्थ्य व चिकित्सा

पुस्तक का नाम मूल्य (रु.)
भोग रोग योग.........................200
चमत्कार को नमस्कार................100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 1......100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 2 200
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 3 200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 1...125
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 2 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 3 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 4 ..200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 5 ..200
ग्रह-नक्षत्र शांति द्वारा रोगोपचार......80
मंत्रों द्वारा रोगोपचार....................30
आसनों द्वारा रोगोपचार.................30
प्राणायाम द्वारा रोगोपचार.............25
रोगोपचार में उपयोगी हस्त मुद्राएं....30
रोगोपचार में उपयोगी रत्न.............25
सूर्य रश्मियों के रंगों से रोगोपचार....20
तन-मन के रोगों से मुक्ति की युक्ति.....25
आसनःआरोग्यता का अनुपम साधन..225
प्राणायाम 150

अध्यात्म

खुला आमंत्रण परमानन्द के लिए..100
मानुष तन दुर्लभ अति..................30
हो कौन? जाओगे कहां? जानोगे कैसे?....100
जीवन शांत मन के साथ...............35
तनाव मुक्त जीवन.......................35
गीता : मोह से मोक्ष तक की गाथा..50
लाली मेरे लाल की....................125
समाधान...............................150
एक शाश्वत खोज.....................125
मर्म की बातें (I,II,III)............ 75
कुडलिनी जागरण.....................200
सफलता के सनातन सूत्र-प्रथम पुष्प....125
कार्य सफलता में बाधक तनाव 125
Living with peace of life.........35
Eternal Bliss...................150
Shedding of stress.............50
Effectuation of Shani Adoration...200
Tiny Tips 125

संपर्क करें - श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम ट्रस्ट, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला, फतेहपुर बेरी, महरोली, नई दिल्ली-74 फोन - 26654400, 26653600, फैक्स : 26653500

भक्ति साधना के सर्वोच्च सोपान पर पहुंचने वाले भक्त अत्यंत सरल स्वभाव के व निष्कपट हो जाते हैं। वे एक-दूसरे से व्यवहार करते समय भी कभी छल से काम नहीं लेते और हमेशा प्रभु पर भरोसा रखते हैं कि वे हमारी हर प्रकार से रक्षा करेंगे, हमारे लिए जो भी हितकर व कल्याणकारी होगा, उसे हमारे प्रभु ही हमें उपलब्ध करायेंगे, कोई और नहीं। चाहे जैसी भी परिस्थिति हो, उसे वे भक्त प्रभु का ही प्रसाद समझ हर्ष से स्वीकार कर लेते हैं।

उजड़े हुए लोगों को बसाने और उनके कष्ट दूर करने में हाथ बंटाकर कर लो अपना मानव-तन सार्थक - दाती श्री

भगवान की भक्ति से भक्त की सभी अमंगलों से रक्षा होती है। इसीलिए भक्तजन उन्हें मंगल-भवन अमंगलहारी कहते हैं। वे परम कृपालु व भक्त वत्सल होते हैं। भगवान को मंगलमूर्ति भी कहते हैं जिसका तात्पर्य यह है कि प्रभु के रूप में साक्षात् मंगल ही मूर्तिमान हो जाता है। यही वजह है कि अपना हर प्रकार से मंगल चाहने वाले भक्तजन अनवरत भगवान की भक्ति में ही संलग्न रहते हैं। वे अपना संपूर्ण जीवन प्रभु की परिचर्या में ही लगा देते हैं। उनका खाना-पीना, उठना-बैठना तथा संसार के सभी व्यापार प्रभु के निमित्त ही हुआ करते हैं। वे अपना समस्त जीवन भगवान के श्री चरणों की सेवा में ही समर्पित कर देते हैं। प्रभु की कृपा से उन्हें जो भी उपलब्ध हो जाता है, उसे प्रभु का प्रसाद समझ शिरोधार्य कर लेते हैं। वे अपने सभी शुभाशुभ कर्म भगवान को ही समर्पित करते जाते हैं। अतः कर्मफल बंधन से भी वे बड़ी आसानी से मुक्त हो जाते हैं। भगवान की अनुकंपा से भक्त तीनों लोक में निर्भय होकर विचरण करते हैं।

आध्यात्मिक साधना में उन्मुख होने वाले भक्तों को भगवान की कृपा से विशेष शक्ति प्राप्त होती है। प्रभु की अनुकंपा से उन्हें प्रोत्साहन ही नहीं मिलता बल्कि प्रभु की स्नेह छाया में उनके अंदर स्वतः एक ऐसी दिव्य स्फूर्णा जाग्रत होती है जिसकी बदौलत वे साधना के मार्ग में बड़ी तेजी से आगे बढ़ने में सफल हो पाते हैं। भक्ति-साधना के विविध सोपानों पर चढ़ते हुए अपने मानव तन को सार्थक करने के लिए प्रयत्नशील और भक्ति-साधना में संलग्न भक्तों को प्रभु ऐसा बल प्रदान करते हैं कि वे बड़ी सरलता से भक्ति के अंतिम सोपान पर भी पहुंचने में कामयाब हो जाते हैं।

सद्ग्रंथों में भक्ति की विविध विधाओं की चर्चा करते हुए स्पष्ट किया है कि जो भक्त निष्कपट भाव से भगवान की भक्ति में संलग्न होते हैं, वे बड़ी आसानी से इसके विविध सोपानों पर चढ़ते हुए उस स्थिति में भी पहुंचने में सफल हो जाते हैं जब उनके अंदर आत्म संतोष की भावना जाग्रत हो जाती है। वे दोष-दृष्टि की गिरफ्त से बहुत ऊंचे उठ जाते हैं। भक्ति साधना के सर्वोच्च सोपान पर पहुंचने वाले भक्त अत्यंत सरल स्वभाव के व निष्कपट हो जाते हैं। वे एक-दूसरे से व्यवहार करते समय भी कभी छल से काम नहीं लेते और हमेशा प्रभु पर भरोसा रखते हैं कि वे हमारी हर प्रकार से रक्षा करेंगे, हमारे लिए जो भी हितकर व कल्याणकारी होगा, उसे हमारे प्रभु ही हमें उपलब्ध करायेंगे, कोई और नहीं। चाहे जैसी भी परिस्थिति हो, उसे वे भक्त प्रभु का ही प्रसाद समझ हर्ष से स्वीकार कर लेते हैं। दुख मिले या सुख, दोनों को वे अपने ही कर्मों का फल समझते हैं। अनुकूल व प्रतिकूल दोनों ही स्थितियों को भक्तगण प्रभु का ही उपहार समझ सिर-माथे से लगा लेते हैं। भगवान की अनुकंपा से भक्ति साधना के मार्ग पर अग्रसर होने के उत्सुक भक्त को बड़ी आसानी से भक्ति के उच्चतम सोपान पर चढ़ने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है। भक्ति साधना के सर्वोच्च सोपान पर पहुंचने वाले भक्तों के अंदर स्वतः ऐसा बदलाव आ जाता है कि आश्चर्य होता है। पूरी तरह छल-प्रपंचों की गिरफ्त से बाहर निकल जाते हैं। उसका आचार-व्यवहार पूरी तरह सात्विक बन जाता है। उसके जीवन के हर कार्यकलाप भगवान के भरोसे पर ही संचालित होते हैं। प्रभु की अनुकंपा उसे सुख-दुख के अहसास वाली स्थिति से बहुत ऊपर उठा देती है। उस स्थिति में पहुंचे भक्त पर प्रभु की ऐसी अनुकंपा होती है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। उसकी समस्त कामनाएं पूरी हो जाती हैं। बिना मांगे ही उसकी सभी मुरादें पूरी हो जाती हैं। उसके लोक-परलोक दोनों सुधर जाते हैं।

याद रहे, ऐसी स्थिति किसी को यकायक प्राप्त नहीं हो जाती। उस स्थिति में पहुंचने की बुनियाद समसामयिक संतों व भक्तों की संगत से प्रारंभ होती है। उसी सच्चाई की तरफ इशारा करते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने स्पष्ट घोषित किया है कि प्रथम भगति संतन कर संगा। अतः भक्तिमार्ग पर अग्रसर होने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य को समय के सच्चे संतों की संगति का लाभ मिले, उनके सदुपदेश से अपना जीवन संवारने की चेष्टा करने का सुयोग मिले।

किंतु किसी बड़भागी व शुभकर्मी मनुष्य को ही समय के सच्चे संतों का सान्निध्य हासिल होता है। पिछले जन्म में हमने कितना पुण्य किया है, यह तो हमें मालूम नहीं, किंतु वर्तमान जन्म में हमें कर्मयोनि मानव का देव दुर्लभ शरीर प्राप्त हुआ है उसका सदुपयोग कर हम अपने पुण्य कर्मों के भंडार में इजाफा कर सकते हैं। ऐसा करने से हमें समय के सच्चे संतों का सान्निध्य हासिल करने में सरलता मिलती है। कहा भी है - पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता। सतसंगति संसृति कर अंता॥ अतः अपने पुण्य भंडार में वृद्धि करने के लिए हमें आज व अभी से सचेष्ट हो जाना चाहिए। याद रहे, दुनिया में तरह-तरह के शुभ कर्म हो सकते हैं किंतु सबसे बड़ा पुण्य परोपकार को माना गया है। कहा भी है - परहित सरिस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई। अतः परोपकार व परहित के काम में कभी पीछे मत रहो। उजड़े हुए लोगों को बसाने और उनके कष्टों को दूर करने वाले कार्यों में हाथ बंटा कर अपना मानव तन सार्थक करो। यह एक सुंदर मौका है। इसे गंवाओ मत।

दाती के अनमोल वचन

गुरुमंत्र में जरुर देखिये INDIA TV

पर हर रोज रात्रि 11:00 बजे